कैथल-हरियाणा। 'आध्यात्मिक ज्ञानोदय द्वारा स्वर्णिम युग' कार्यक्रम के दौरान मंचासीन हैं जिला सत्र न्यायाधीश विवेक नासिर, म्युनिसिपल काउंसिल की चेयरपर्सन सीमा कश्यप, ब्र.कु. अमीरचंद, ब्र.कु. पुष्पा, ब्र.कु. कविता, ब्र.कु. रानी तथा ब्र.कु. गुरूभजन।

पानीपत-हरियाणा। ज्ञान मानसरोवर के प्रथम वार्षिकोत्सव पर 'ग्लोबल एनलाइटमेंट फॉर गोल्डन एज प्रोजेक्ट' का दीप प्रज्वलित कर शुभारंभ करते हुए ब्र.कु. सरला दीदी, ब्र.कु. मोहन सिंघल, दीपक त्यागी, ब्र.कु. भारत भूषण, राजीव पुनानी, ब्र.कु. जगपाल तथा अन्य।

कपूरथला-पंजाब। सभ्याचार दिवाली मेला के उपलक्ष्य में वर्कर क्लब रेलकोच फैक्ट्री कपूरथला द्वारा राजयोगिनी ब्र.कु. लक्ष्मी को सम्मानित करते हुए महिला कल्याण संगठन की उप प्रधान अनीता सिन्हा, वर्कर क्लब के सेक्रेट्री नरेश भारती तथा अन्य सदस्य।

बरामुंडा-ओडिशा। भारतीय योग संस्थान के 'योग साधना केन्द्र' के उद्घाटन अवसर पर आमंत्रित किये जाने पर उपस्थित हैं राजयोगिनी ब्र.कु. दुर्गेश नंदिनी, सुधांशु शेखर मिश्रा, कोऑर्डिनेटर, ओडिशा प्रांत, डॉ. रामकृष्ण शर्मा, लोकल सेंटर कोऑर्डिनेटर तथा योग संस्थान के सदस्य।

कर्म सिद्धान्त

भगवान ने जो समझाया है, और आज तक भी हम जानते हैं उस सिद्धान्त को, वो सिद्धान्त है जो करेगा सो पायेगा। जैसा करेगा वैसा पायेगा। जितना करेगा उतना पायेगा। ये कर्म सिद्धान्त है। इसे स्पीरिचुअल लॉ कहो, यूनिवर्सल लॉ ऑफ कर्म कहो, इतना सत्य है कि उसमें भगवान कुछ नहीं करता। हमारे कर्म ही निर्धारित करते हैं कि हर कर्म का जो प्रत्युत्तर है वो हमें प्राप्त होना ही है। जैसा किया वैसा प्राप्त होगा। जितना किया उतना प्राप्त होगा। और जो करेगा सो पायेगा। अटल है, इस नियम को कोई चेंज नहीं कर सकता है। संसार की कोई शक्ति नहीं है जो इस नियम को बदली कर दे। इसलिए अगर आज हम इस बात को समझ लें, इस सिद्धांत को समझ लें, तो शायद आगे के हर कर्म के प्रति हम जागरुक हो जायेंगे। क्योंकि कर्म किसी को छोड़ता नहीं है। उसमें भगवान का कहीं रोल नहीं है। मुझे याद आता है महाभारत का वो दृश्य कि जब पांडवों में से अर्जुन और कौरव में से दुर्योधन दोनों भगवान से मदद मांगने जाते हैं और कहा जाता है कि उस समय भगवान लेटे हुए थे, दुर्योधन सिरहाने जाकर बैठ जाता है। अर्जुन पैरों के पास खड़ा हो जाता है। जैसे ही भगवान की आँखें खुली, तो अुर्जन को सामने देखा। और देखते ही कहा अर्जुन तुम कब आये, दुर्योधन ने कहा कि मैं पहले आया हूँ, मुझे पहले मांगने के लिए कहा जाये। अर्जुन ने कहा कि ठीक है तुम मांग लो। उस वक्त भगवान ने यही कहा कि ठीक है एक तरफ मैं हूँ और एक तरफ मेरी अक्षौणी सेना है। क्या चाहिए बोलो। और एक वाक्य जोड़ दिया भगवान ने बहुत सूक्ष्म और वो वाक्य था कि जिस तरफ मैं रहूंगा मैं शस्त्र नहीं उठाऊंगा। मैं युद्ध नहीं करूंगा। मैं सारथी ज़रूर बन सकता हूँ। सारथी बनकर रथ चलाऊंगा। लेकिन मैं युद्ध नहीं करूंगा। जीवन भी एक संघर्ष है और इस संघर्ष में, जहाँ हर व्यक्ति को युद्ध करना पड़ता है, इस युद्ध में भगवान सारथी बन सकता है, लेकिन हमारे बदले वो युद्ध करे, कर्म की गुह्य गति इज़ाज़त नहीं देती कि भगवान हमारे कर्म में कोई दखल करे। इसलिए भगवान ने कहा कि मैं शस्त्र नहीं उठाऊंगा। यानि तुम्हारा जो जीवन का युद्ध है, वो तुम्हे ही लड़ना होगा। मैं सारथी बनूंगा, गाइडेंस ज़रूर दूंगा, इंस्ट्रक्शन्स दे सकता हूँ, लेकिन मैं तुम्हारे बदले युद्ध करूँ, ये सम्भव नहीं है। तो भगवान हमारे कर्मों में इंटरफियर नहीं कर सकता है, कायदा नहीं है। हमारे जीवन का युद्ध हमें खुद लड़ना होगा। उसके लिए पास्ट के जो कर्म हैं वो सुनिश्चित करते हैं कि किस प्रकार का या किस क्वालिटी का जन्म होगा और किस क्वालिटी की जीवन यात्रा होगी। इस जीवन यात्रा को भी हमारे कर्म निर्धारित करते हैं। आज अगर हम अपने आप को देखें एक साक्षी दृष्टा के रूप में तो हम ये देख सकते हैं बहुत अच्छी तरह से कि अगर जीवन की क्वालिटी अच्छी है, अच्छे घर में अच्छी शिक्षा के साथ हम बड़े हुए, सभ्यता पूर्ण हमारा जीवन है, भाग्य है। ये बहुत बड़ा भाग्य है। अच्छे कर्मों का फल है। परन्तु इस जन्म में ऐसा कोई कर्म ना हो, जो आगे की जीवन यात्रा हमारी कहीं ना कहीं कोई तकलीफ की अनुभूति करा दे। बल्कि हमारी कोशिश ये होनी चाहिए कि हमारी आगे की जीवन यात्रा अच्छी से अच्छी बन जाये। बहुत अच्छी बात है। तो कर्म सिद्धान्त जो है उसको हमेशा स्मृति में रखते हुए जीवन में जब आगे बढ़ते हैं, तो हर समय जागृति के साथ कर्म करते हुए हम आगे बढ़ेंगे।

-ब्र.कु. उषा, वरिष्ठ राजयोग प्रशिक्षिका

यह जीवन है...

एक ही दिन में बिगड़ने वाले दूध में कभी नहीं बिगड़ने वाला घी छिपा है .....!! इसी तरह आपका मन भी अथाह शक्तियों से भरा है, उसमें कुछ सकारात्मक विचार डालो, अपने आपको मथो अर्थात् चिंतन करो ..... अपने जीवन को और तपाओ और तब देखना, आप कभी हार नहीं मानने वाले सदाबहार व्यक्ति बन जाओगे।

ख्यालों के आईने में...

ईश्वर तो दिखाई भी नहीं देते... विश्वास कैसे करूँ? सुन्दर जवाब मिला... श्रद्धा वाई फाई की तरह होती है...दिखती तो नहीं है...पर सही पासवर्ड डालो तो कनेक्ट हो जाते हो।

कोहरे से एक अच्छी बात सीखने को मिली कि जब जीवन में कोई रास्ता न दिखाई दे रहा हो..... तो बहुत दूर तक देखने की कोशिश व्यर्थ है। धीरे धीरे एक एक कदम चलो, रास्ता खुलता जायेगा।

पलवल-कृष्णा कॉलोनी(हरियाणा)। कन्या अनाथ आश्रम (प्रेमघर) में ब्रह्माकुमारीज़ द्वारा कन्याओं को गर्म कपड़े वितरित करने के पश्चात् समूह चित्र में सेवाकेन्द्र संचालिका ब्र.कु. सुदेश, बिजली निगम के एस.डी.ओ. अशोक शर्मा व उनकी धर्मपत्नी सुमन शर्मा, एबल चैरिटेबल ट्रस्ट व आश्रम की उपाध्यक्ष रानी लाल, आश्रम की वार्डन चंदा सहगज तथा आश्रम की कन्यायें।

ओमशान्ति मीडिया सदस्यता हेतु सम्पर्क करें....

कार्यालय - ओमशान्ति मीडिया

संपादक - ब्र.कु. गंगाधर, ब्रह्माकुमारीज़, शान्तिवन, तलहटी, पोस्ट बॉक्स न - 5, आबू रोड (राज.) 307510

सम्पर्क- M- 9414006096, 9414182088, Email-omshantimedia@bkivv.org

सदस्यता शुल्क : भारत - वार्षिक 200 रूपये, तीन वर्ष 600 रूपये, आजीवन 4500 रूपये। विदेश - 2500 रूपये (वार्षिक)

कृपया सदस्यता शुल्क 'ओमशान्ति मीडिया' के नाम मनीऑर्डर या बैंक ड्राफ्ट (पेएबल एट शांतिवन, आबू रोड) द्वारा भेजें।